कारक चिह्नों से कहानी को पूरा करें

सहयोग की भावना

पर	से	की	का	ने	को	के	में

एक दिन शरीर ------इन्द्रियों ---- सोचा कि हम लोग मेहनत कर करके मर जाते हैं और ये पेट हमारी कमाई मुफ्त ------ही खा जाता है। अब ----- हम कमाएंगे तो हम खुद ही खाएंगे, नहीं तो काम करना ही बंद कर देंगे। इस सुझाव ----- सबने हामी भर दी। पेट को इस प्रस्ताव का पता चला तो बोला - मैं तुम्हारी कमाई खुद नहीं रखता हूँ। जो कुछ तुम लोग देती हो, उसे तुम्हारी शक्ति बढ़ाने -----लिए वापस तुम्हारे पास भेज देता हूँ। यकीन रखो, तुम्हारा परिश्रम तुम्हें ही वापस मिल जाता है। यह बात इन्द्रियों के समझ में नहीं आई। उनकी नाराजकी बनी रही। आपस में रखे गए इन्द्रियों के प्रस्ताव के अनुसार, सभी इन्द्रियो ने काम करना बंद कर दिया। पेट को भोजन नहीं मिला तो वह भूख से तड़पने लगा। खुद के शिथिल पड़ने ----- वह सब ----- भी उर्जा देने ------ असमर्थ हो गया। इससे शरीर के सारे अंगों की शक्ति नष्ट होने लगी। शरीर ------ऐसा हाल देखकर मस्तिष्क ने इन्द्रियों से कहा - मूर्खो तुम्हारा परिश्रम कोई नहीं खा रहा है। वह लौटकर तुम्हे ही वापस मिलता है। ये मत सोचो कि दूसरों की सेवा से तुम्हारा नुकसान होता है, जो तुम दूसरों को देते हो वह ब्याज समेत तुम्हारे पास लौटकर आता है। भोजन ------ मिलने वाली उर्जा के अभाव से जूझ रही इन्द्रियों को आपसी सहयोग की वास्तविकता समझ में आगई। उन्होंने वापस पहले------ तरह काम करना शुरू कर दिया और फिर कभी शिकायत नहीं की। दोस्तो कार्य ----- सफलता का श्रेय किसी------- भी जायें, यह सम्भव सामूहिक पुरषार्थ ------- ही होता है।

LIVEWORKSHEETS